आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि घर पर रसोई का बचा हुआ सामान, सब्जी की छीलन, भूसी, रोटी आदि एक दो बकरी के लिए प्रर्याप्त होती है। यदि बकरी को घर पर रखकर खिलाया जाय तो सन्तुलित आहार की आवश्यकता होती है। एक दूध देने वाली बकरी को प्रतिदिन 3.5-4.5 किग्रा० आहार की आवश्यकता होती इससे 800 ग्राम सूखा चारा शेष हरा चारा होना चाहिए। प्रति किलो दूध उत्पादन के लिए 400 ग्राम दाना जिसमें 15 प्रतिशत प्रोटीन हो प्रतिदिन देना चाहिए तथा गर्भ रक्षा हेतु गर्भावस्था के अन्तिम दो माह में 200 ग्राम दाना प्रति दिन बढ़ा देना चाहिए। प्रजनन के लिए प्रयोग किये जाने वाले बकरों के लिए 500 ग्राम दाना प्रतिदिन आवश्यक रूप से देना चाहिए। इसके अलावा प्रतिदिन प्रति बकरी को 15-20 ग्राम खनिज लवण तथा ताजा स्वच्छ जल कम से कम दिन में दो बार पिलाना चाहिए।

बकरियों में लगने वाले प्रमुख रोगों से बचाव एवं रोकथाम :

बकरियों में प्रमुख रूप से निम्नलिखित बीमारियाँ लगती हैं।

(1) खुरपका मुँहपका –

इस बीमारी में मुंह में छाले पड़ जाते हैं। पशु चारा खाना बन्द कर देता है। खुरों के आस पास पैरों पर छाले पड़ जाते हैं। तथा उनमें घाव हो जाते हैं। बीमारी से बचाव हेतु वर्ष में दो बार फरवरी–मार्च एवं अक्टूबर–नवम्बर में टीका लगवायें। उपचार के रूप में पैर व मुँह को लाल दवा (पोटेशियम परमेगनेट) के घोल से धोयें।

(2) गोटपोक्स :

इस रोग में थन, अयन, ओंठ एवं मुँह में फफोले पड़ जाते हैं और नाक से पानी बहने लगता है। रोग से बचाव के लिए साल में एक बार जनवरी माह में टीकाकरण अवश्य करायें। उपचार के रूप में घावों को साफ करके उन पर जिंक का मलहम लगायें। पशु को अन्य पशुओं से अलग रखें।

(3) निमोनियाँ :

यह बीमारी बरसात एवं जाड़े के दिनों में अधिक होती है। इसमें छोटे बच्चे अधिकतर मर जाते हैं। बचाव हेतु पशु को सर्दी से बचायें तथा नियमित रूप से पेट के कीड़ों की दवा पिलाते रहें। उपचार के लिए पशु को तारपीन के तेल का वफारा दें एवं पशु चिकित्सक से मिलें।

(4) थनैला रोग :

इस रोग में थन और अयन सूज जाते हैं। थन से दूध में छिछड़े आते हैं। कभी–कभी थन तथा पूरा अयन खराब हो जाता है। बचाव के लिए थन, अयन में चोट न लगने दें। पशु के बैठने का स्थान समतल रखें, पशु के बाड़े में गन्दगी कदापि न रहने दें। उपचार के लिए थन की सफाई एकीलेपिन घोल से करें तथा 2-3 दिन तक मेस्टप्लोन ट्यूब लगायें।

(5) अफरा :

बकरी की आदत है कि वह कुछ न कुछ खाती ही रहती है। कभी–कभी अधिक खा जाती है या सड़ी गली चीजें खा जाती है जिसके कारण उसको अफरा लग जाता है या पेट फूल जाता है जिससे कभी–कभी उसकी मौत भी हो जाती है। इससे बचाव के लिए बकरी को नियमित रूप से अच्छा व साफ चारा खिलाएं। इलाज के लिए 40-50 ग्राम टिष्योज पाउडर पानी में घोलकर पिलायें अधिक परेशानी पर 20-25 मि०ली० ब्लौटोना मिलाकर दें एवं निकट के पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

(6) बकरियों का परजीवियों से बचाव :

पेट के कीड़े पटेरा (गोल कृमि) फीता कृमि, जिगर कृमि तथा बाहर शरीर पर लगने वाले जू, किलनी, आदि परिजीवियों से बकरियों को अत्यधिक परेशानी होती है एवं उनके उत्पादन पर काफी प्रभाव पडता है। अधिकतर बकरियों में पेट के कीड़े (विसी) से अत्यधिक मौत होती है। बकरियों में लगने वाले अन्तः परजीवियों से बचाव एवं रोकथाम के लिए नीलवर्म, बेनमिन्थ या एल्बेन्डाजोइल दवा नियमित रूप से हर तीसरे माह देते रहें। वाहय परजीवी जूँ, किलनी आदि से बचाव के लिए पोस्टोवान या गेमेक्सीन के घोल से पशु को कभी–कभी नहलाते रहें।

बकरी पालन हेतु आवश्यक सुझाव :

1. बकरियों की दिन में कम से कम 3 बार देखभाल करें।
2. बकरी के बाड़े को एवं फीडर कक्ष को हमेशा साफ रखें। बाड़े को चूने से हर पन्द्रहवें दिन शोधित करें।
3. बकरियों को प्रतिदिन साफ एवं संतुलित आहार दें।
4. प्रतिदिन दिन में कम से कम दो बार स्वच्छ जल का सेवन करायें।
5. आहार में प्रतिदिन 20 से 25 ग्राम मिनरल मिक्चर या 20 ग्राम खडिया, 10 ग्राम नमक को मिलाकर दें। आहर में "साइलेज" का भी प्रयोग करें।
6. सर्दी, गर्मी एवं वर्षा से बचाव हेतु उपयुक्त इन्तजाम करे एवं बकरी के बैठने वाले स्थान को सूखा रखे इसके लिए सूखी बिछावन का प्रयोग करें।
7. नीम की पत्तियों का भरपूर उपयोग करें। इसके उपयोग से आहार में पोषक तत्वों की पूर्ति के साथ–साथ विभिन्न रोगो में कमी आयेगी एवं आहार पर होने वाले खर्च में भी कमी आयेगी।
8. बकरी के नवजात शिशुओं की अच्छी प्रकार से देख भाल करें।

डा० डी० के० श्रीवास्तव
(कार्यक्रम समन्वयक)
कृषि विज्ञान केन्द्र,
परवाहा, औरैया 206244
मो० 09760051333
E-mail kvkauraiya@gmail.com

श्री बृज विकास सिंह
वि०व०वि०(पशुपालन)
कृषि विज्ञान केन्द्र,
परवाहा, औरैया 206244
मो० 09368793839

bakripalan.com

बकरी पालन

एक उत्तम व्यवसाय

bakripalan.com

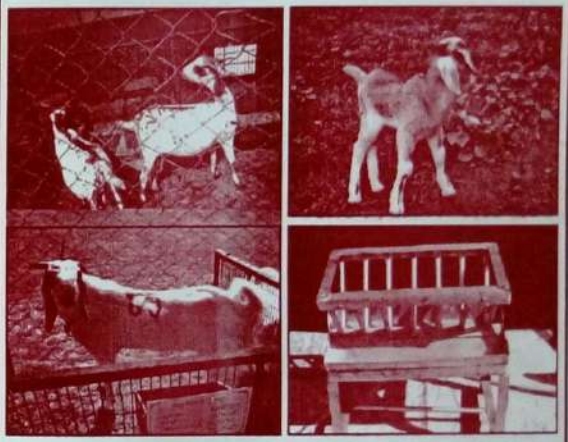

कृषि विज्ञान केन्द्र
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
परवाहा, दिबियापुर औरैया (उ० प्र०) 206244
फोन एवं फैक्स: 05683 - 282175
E-mail kvkauraiya@rediffmail.com

"बकरी पालन" एक उत्तम व्यवसाय

प्राचीन काल से ही बकरी पालन ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति का अभिन्न अंग बनता चला आ रहा है। बकरी एक अत्यन्त ही उपयोगी और सुन्दर पशु है, तथा दुधारू पशुओं में एवं देश के पशुधन में बकरी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। घरेलू पशुओं में अन्य कोई ऐसा पशु नहीं है जिसे इतने कम खर्च पर पाला जा सके। इसीलिए बकरी को गरीबों की कामधेनु भी कहते है। भारतवर्ष में बकरियाँ लगभग सभी प्रदेशों में पायी जाती है। ऐसे स्थान जहाँ केवल निम्नकोटि का चारा या झाड़ियाँ ही उपलब्ध रहती है वहाँ बकरी पालन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि प्रकृति ने बकरियों को जंगल की कटीली झाड़ियाँ इत्यादि पर ही निर्भर रहने का श्रेय दिया है। ये कड़वे नमकीन तथा खट्टे किस्मों के पौधों का भी उपभोग करती हैं जो कि अन्य पशु अपने भोजन में कम लेते हैं। इनके पालन हेतु थोड़ा साही स्थान पर्याप्त होता है।

भारतवर्ष में पशुपालन से प्राप्त कुल उत्पाद में बकरी व्यवसाय लगभग 8 प्रतिशत का योगदान करती है। बकरी से प्रति वर्ष लगभग 10,000 करोड़ रुपये की आय प्राप्त होती है। देश में बकरी की 22 प्रमुख नस्लें है।

वास्तव में बकरी पालन ग्रामीण बेरोजगार के लिए रोजगार का बहुत ही उपयोगी विकल्प है। कम पूजीं से प्रारम्भ होने वाला यह रोजगार डेयरी फार्म की तुलना में कम जोखिम व अधिक लाभ देय होता है। बकरी पालन को और अधिक लाभकारी बनाने के लिए बकरी पालकों को निम्न मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान रखना आवश्यक है।

(1) बकरियों की प्रमुख नस्लों का चुनाव।
(2) बकरियों की आवास व्यवस्था।
(3) बकरियों में प्रजनन।
(4) बकरियों का आहार।
(5) बकरियों में लगने वाले रोगों से बचाव एवं रोकथाम।

बकरियों का चुनाव :

दुधारू बकरी का चुनाव करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहियें।

(1) 30–40 किग्रा० वजन की दुधारू बकरियाँ (नस्ल के अनुसार) अच्छी मानी जाती है।
(2) बकरी का शरीर बड़ा होना चाहिये।
(3) दुधारू बकरी की खाल मुलायम व ढीली होनी चाहिये।
(4) बकरी देखने में चुस्त और स्वस्थ हो तथा आँखे चमकदार होनी चाहिये।
(5) बाँक–स्पंज की तरह मुलायम हों तथा दूध दुहने के बाद सिकुड़ जानी चाहियें।
(6) दूध की नलियाँ, अमपदेद्ध उभरी हुई व लम्बी होनी चाहिए।
(7) थन मध्यम आकार के 8–10 सेमी० लम्बे और एक समान होने चाहिए। थन उभरे हुए हों ना कि लटके हुए।

बकरी पालन हेतु बकरियों की प्रमुख नस्लें :

बकरी पालन का सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु है नस्ल का चयन, देश की अधिकांश बकरियाँ ऐसी हैं जो किसी निश्चित नस्ल की नहीं हैं, इस स्थिति में नस्ल का चुनाव और जरूरी हो जाता है।

बकरी की नस्लों का वर्गीकरण :

(1) दुधारू नस्लें (Milch Breeds)- जमुनापारी, बीटल, मारवाड़ी तथा सूरती।
(2) माँस उत्पादक नस्लें (Meat Breeds)- गंजम, बंगाल तथा चेगू।
(3) ऊन–उत्पादक नस्लें (Wool Breeds)- चंबा, प मीना।
(4) भारवाही नस्लें (Draft Breeds)- गद्‌आी, चंबा।
(5) द्विकाजी नस्लें (Dual Purpose Breeds)- इनसे माँस व दूध दोनो प्राप्त होते है बरबरी, जमुनापारी, मेवाड़ी, बीटल आदि।
(6) विदेशी नस्लें– नूवियान, अंगोरा, एल्पाइन, सानन, टौगन वर्ग

बकरी पालकों की प्रथम आवश्यकता अच्छी नस्ल की है जो उस क्षेत्र में अधिक उत्पादन दे सके एवं वहाँ की जलवायु में अच्छी प्रकार रह सके। बकरी की मुख्य नस्लों का वर्णन इस प्रकार है।

(1) जमुनापारी (2) बरबरी (3) सिरोही (4) बीतल

(1) जमुनापारी :

इस नस्ल की बकरियाँ उ०प्र० के इटावा, औरैया एवं आगरा जिलों में जमुना खादरों तथा उसके आस पास के इलाकों में पाई जाती हैं। नर का शरीर भार औसतन 70–80 किग्रा० तथा मादा का 40–60 किग्रा० पाया जाता है। बकरियों की टाँगे लम्बी, नाक उठी हुई, कान लम्बे तथा पिछली टांगो पर लम्बे बाल पाये जाते हैं। यह नस्ल दूध उत्पादन के लिये अच्छी है जो 3–4 लीटर दूध प्रतिदिन तक दे देती हैं। लेकिन वर्ष में केवल एक ही बार बच्चा देती है इस नस्ल को घर पर बांधकर नहीं पाला जा सकता है, इसके लिए जंगल में चराई की व्यवस्था बहुत जरूरी है।

bakripalan.com

(2) बरबरी :

यह नस्ल उ०प्र० के एटा, आगरा, अलीगढ़ एवं मथुरा जनपदों में अधिकता से पायी जाती है। इस नस्ल की बकरी का आकार मध्यम, कान छोटे–छोटे, तथा ऊपर को खड़े हुए, एवं शरीर पर बाल छोटे–छोटे होते हैं सफेद शरीर पर लाल बादामी या काले धब्बे होते है, टाँगे छोटी, थन बड़े–बड़े एवं पिछले पुट्‌ठों पर बाल छोटे–छोटे होते हैं नर का वजन 40–50 कि० ग्रा० तथा मादा का औसतन शरीर भार 25–35 कि० ग्रा० होता है। यह दूध और माँस दोनों के लिए अच्छी नस्ल है। इस जाति की बकरियाँ 6–7 माह की आयु में ही गर्भ धारण कर लेती है तथा 14–15 महीनों में दो बार बच्चे दे देती है तथा अधिकतर एक ब्याँत में दो बच्चों को जन्म देती है। इसको घर पर बांधकर भी पाला जा सकता है एवं मैदानी क्षेत्रों में कहीं पर भी सफलता पूर्वक पाला जा सकता है।

(3) सिरोही :

यह नस्ल राजस्थान में अधिकतया पायी जाती है। जिसका शरीर सुढौल एवं छोटे आकार का होता है एव शरीर सघन बालों से युक्त होता है, सिरोही नस्ल की बकरी का सिर छोटा व कान लम्बे लटके होते है। यह नस्ल दुधारू होती है।

(4) बीतल :

इस नस्ल की बकरियाँ गुरूदासपुर, अमृतसर तथा इसके आस पास पाई जाती है। बकरियों का रंग काला, सफेद धब्बेदार होता है, शरीर देखने में जमुनापारी बकरी जैसा लगता है। इस बकरी की प्रजनन क्षमता जमुना पारी बकरी से अधिक परन्तु बरबरी बकरी से कम होती है।

बकरियों की आवास व्यवस्था :

अधिकतर पशुपालक बकरी के लिए अलग से घर की व्यवस्था नहीं करते हैं, बल्कि अपने रहने के घर के एक कोने में कहीं भी छोटी सी झोपड़ी में बाँधकर रखते हैं जिससे बकरी पालन पर कम खर्च करके अधिक धन अर्जित करते है। लेकिन जब बकरी पालक के पास बकरियों की संख्या एक से बढ़कर कई हो जाती है तब घर में बांधना एवं उचित सफाई रखना विशेषकर बरसात तथा जाड़े के दिनों में बकरी के स्वास्थ के लिए अच्छा नहीं रह पाता हैं। बकरियों के लिए खुला हुआ स्थान जहाँ पर्याप्त मात्रा में शुद्ध हवा तथा बैठने के लिए सूखा स्थान ही उत्तम रहता है। अतः बकरी पालक बड़े जानवरों (गाय, भैंस) की तरह बकरियों के लिए अच्छी प्रकार के घर बनायें जिससे बकरियाँ प्रतिकूल मौसम में भी अच्छी प्रकार से रह सकें। इसके लिए 6 फुट लम्बा, 4 फुट चौड़ा, तथा 6 फुट ऊँचा मकान बनाना चाहिए। इस प्रकार के एक मकान में दो बकरी आसानी से पाली जा सकती हैं। सदैव नर को मादा से अलग बांधना चाहिए अन्यथा दूध में गन्ध आने लगती है।

बकरियों में प्रजनन :

बकरियां नस्लों के अनुरूप 6 माह की आयु से एक वर्ष की आयु तक प्रजनन योग्य हो जाती हैं। साधारणतः बकरी वर्ष में किसी भी महीने में गर्मी में आ सकती है। अधिकाँश बकरियाँ मई व जून के महीनों में गर्मी में आती हैं। बकरियों से अधिक लाभ कमाने के लिए जरूरी है कि प्रजनन ठीक समय से कराया जाय। यदि बकरी प्रजनन योग्य है और वह गर्मी में नही आ रही है तो नर की विछावन को मादा के घर में डाल देना चाहिए जिससे बकरी को गर्मी में आने की सम्भावना बढ़ जाती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो बकरियां अधिक बच्चे व दूध देने की क्षमता रखती हैं उनके नर बच्चों को ही प्रजनन के कार्य के लिए प्रयोग में लाया जाय तथा बकरी की नस्लों को ध्यान में रखते हुए उसी नस्ल के बकरे से बकरी का प्रजनन करायें।

बकरियों का आहार :

अधिकतर बकरियों की नस्लें अपने स्वभाव के अनुरूप जंगलों में चरना अधिक पसन्द करती हैं और जंगली झाड़ियाँ, घास, खरपतवार से ही अपना पेट भर लेती हैं। बकरी पालक को घर पर कुछ खिलाने की